भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **श्री जगन्नाथ स्वामी रथ यात्रा** समिति कीडगंज के तत्त्वावधान में प्रयागराज में भगवान जगन्नाथ स्वामी जी की भव्य रथ यात्रा का आयोजन किया गया।

मुख्य बिंदु:

- **रथ यात्रा कीडगंज** में **त्रिवेणी मार्ग** स्थित **श्री जगन्नाथ मंदिर** से शुरू हुई।
  - भगवान जगन्नाथ के नंदीघोष रथ के अलावा गरुड़ देव, बद्री विशाल, भगवान राम और भगवान द्वारकाधीश के रथ भी शोभायात्रा का हिस्सा रहे
  - रथयात्रा में राधा कृष्ण, नरसिंह अवतार और दामोदर लीला को दर्शाती झांकियाँ भी शामिल रहीं।
- **जगन्नाथ रथ यात्रा** एक **वार्षिक हिंदू त्योहार** है जो **भगवान जगन्नाथ**, उनके बड़े भाई **भगवान बलभद्र** और उनकी छोटी बहन **देवी सुभद्रा** की **ओडिशा के पुरी में उनके घरेलू मंदिर** से लगभग तीन किलोमीटर दूर गुंडिचा में उनकी मौसी के मंदिर तक की यात्रा का उत्सव मनाता है।
  - इस **त्योहार के पीछे किंवदंती** है कि एक बार देवी सुभद्रा ने गुंडिचा में अपनी मौसी के घर जाने की इच्छा व्यक्त की।
  - उनकी इच्छा पूरी करने के लिये **भगवान जगन्नाथ और भगवान बलभद्र ने उनके साथ रथ यात्रा पर जाने का निर्णय किया।** इस घटना को प्रतिवर्ष देवताओं को इसी तरह की यात्रा पर ले जाकर मनाया जाता है।
- इस त्योहार की शुरुआत **कम-से-कम 12वीं शताब्दी ई. से हुई है, जब राजा अनंतवर्मन चोडगंग देव ने जगन्नाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।** हालाँकि कुछ स्रोतों से पता चलता है कि यह त्योहार प्राचीन काल से ही प्रचलित था।
- इस त्योहार को **रथों के त्योहार** के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि देवताओं को **तीन विशाल लकड़ी के रथों पर ले जाया जाता है, जिन्हें भक्त रस्सियों से खींचते हैं।**
- यह **आषाढ़ (जून-जुलाई) माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया** को शुरू होता है और **नौ दिनों तक चलता है।**

जगन्नाथ पुरी मंदिर

[//](https://www.drishtiias.com/hindi/images/uploads/1690347025_Puri-Jagannath-Temple.png)

- यह **भारतीय राज्य ओडिशा** के सबसे प्रभावशाली स्मारकों में से एक है।
- यह मंदिर ["सफेद पैगोडा"](#) के नाम से जाना जाता है और यह **चार धाम तीर्थयात्राओं (बद्रीनाथ, द्वारका, पुरी, रामेश्वरम)** का एक हिस्सा है।
- यह [कलिंग वास्तुकला](#) का एक **शानदार उदाहरण** है, जो **घुमावदार मीनारों, जटिल नक्काशी और अलंकृत मूर्तियों** से पहचाना जाता है।
- मंदिर परिसर चारों ओर से ऊँची दीवार से घिरा हुआ है तथा इसके चारों दिशाओं की ओर चार द्वार हैं।
- मुख्य मंदिर में चार संरचनाएँ हैं: **विमान (गर्भगृह), जगमोहन (सभा कक्ष), नट-मंदिर (उत्सव कक्ष) और भोग-मंडप (अर्पण कक्ष)।**
- जगन्नाथ पुरी मंदिर को **'यमनिका तीर्थ'** कहा जाता है, जहाँ हिंदू मान्यताओं के अनुसार, भगवान जगन्नाथ की उपस्थिति के कारण **पुरी में मृत्यु के देवता 'यम' की शक्ति समाप्त हो गई है**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/devotees-take-out-lord-jagannath-rath-yatra